छंद

छंद शब्द 'चद्' धातु से बना है जिसका अर्थ है 'आह्लादित करना', 'खुश करना। यह आह्लाद वर्ण या मात्रा की नियमित संख्या के विन्यास से उत्पन्न होता है। इस प्रकार, छंद की परिभाषा होगी वर्णों या मात्राओं के नियमित संख्या के विन्यास से यदि आह्लाद पैदा हो, तो उसे छंद कहते हैं। छंद का सर्वप्रथम उल्लेख 'ऋग्वेद' में मिलता है। जिस प्रकार गद्य का नियामक व्याकरण है, उसी प्रकार पद्य का छंद शास्त्र है।

छंद के अंग

वर्ण -- वर्ण को अक्षर कहते है। ये दो प्रकार के होते है-- स्वर और व्यंजन

जिनका उच्चारण स्वतंत्र रूप में होता है वह स्वर है। अ से लेकर अः तक स्वर है। व्यंजन स्वर की सहायता से उच्चरित होते है। क से लेकर ज्ञ तक व्यंजन है।

वर्ण 2 प्रकार के होते हैं

1. ह्रस्व स्वर-- ह्रस्व स्वर वाले वर्ण (ह्रस्व वर्ण): अ, इ, उ, ऋ

2. दीर्घ स्वर-- दीर्घ स्वर वाले वर्ण (दीर्घ वर्ण): आ, ई, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ अं अः

चरण -- प्रायः हर एक छंद में चार पंक्तिया होती है। प्रत्येक पंक्ति के 1/4 भाग को चरण कहते है। चरण 2 प्रकार के होते हैं:

1. **समचरण:-** दूसरे और चौथे चरण को समचरण कहते हैं।
2. **विषमचरण:-** पहले और तीसरे चरण को विषमचरण कहा जाता है।

गति -- प्रवाह को गति कहा जाता है। मात्रिक छंदों में गति का प्रयोगअधिक किया जाता है।

यति -- यति का मतलब है विराम। जो छंद छोटे होते है उनमें यति का प्रश्न ही नहीं उठता क्यो कि एक ही सांस में पूरे चरण को पढ़ना कठिन हो जाता है। तो बिच में रुकना पड़ता है।

तुक -- समान उच्चारण वाले शब्दों के प्रयोग को तुक कहा जाता है। पद्य प्रायः तुकान्त होते हैं।

मात्रा -- मात्रा वर्ण के उच्चारण में जो समय लगता है उसे मात्रा कहते हैं। मात्रा २ प्रकार की होती है लघु और गुरु। ह्रस्व उच्चारण वाले वर्गों की मात्रा लघु होती है तथा दीर्घ उच्चारण वाले वर्णो की मात्रा गुरु होती है। लघु मात्रा का मान १ होता है इसलिए उसे एकमात्रिक भी कहते हैऔर उसे "। "चिह्न से प्रदर्शित किया जाता है। इसी प्रकार गुरु मात्रा का मान २ होता है इसलिए उसे द्विमात्रिक भी कहा जाता हैऔर उसे "s" चिह्न से प्रदर्शित किया जाता है।

लघु मात्रा -- 1] सभी ह्रस्व स्वर 2] जिन व्यंजनों के साथ ह्रस्व स्वर मिले हो-- कि कु कृ 3] चंद्र बिन्दु वाले वर्ण 4] जो दीर्घ स्वर ह्रस्व के समान उच्चरित हो।

गुरु मात्रा -- 1] सभी दीर्घ और संयुक्त स्वर 2] दीर्घ तथा संयुक्त स्वरों से युक्त व्यंजन 3] अनुस्वार तथा विसर्गवाले वर्ण 4] संयुक्ताक्षर से पहले का ह्रस्व स्वर या व्यंजन 5] पद या चरण के अंत का ह्रस्व वर्ण दीर्घ हो सकता है।

By Dr.Sangita Chitrakoti

गणविचार

छंदों में गणों का महत्व रहता है।तीन अक्षरों की एक एक इकाई को गण कहते है। प्रत्येक गण में लघु गुरु का स्थान निश्चित होता है। कुल आठ गण है जिन्हे स्मरण रखने के लिए निम्नलिखित सूत्र के आधारपर आठों गणों को निम्न रूप में समझना चाहिए---

"यमाताराजभानसलगा"

इसका प्रत्येक वर्ण एक गण का बोधक है -- यगण, मगण, तगण, रगण, जगण, भगण, नगण, सगण। अंतिम ल लघु का सूचक है और ग गुरु का सूचक है।
इस सूत्र के आधारपर आठों गणों को निम्न रूप में समझना चाहिए।

अ. क्र.	गणों के नाम	स्वरूप	उदाहरण
1	यगण [यमाता]	ISS	खजाना
2	मगण [मातारा]	SSS	माताजी
3	तगण [ताराज]	SSI	स्वीकार
4	रगण [राजभा]	SIS	कालिका
5	जगण [जभान]	ISI	गुलाब
6	भगण [भानस]	SII	भारत
7	नगण [नसल]	III	कमल
8	सगण [सलगा]	IIS	यमुना

छंदों के मुख्य प्रकार

वर्णिक छंद | मात्रिक छंद

वर्णिक छंद -- वर्णिक छंद में वर्ण का स्थान नियमित होता है। अर्थात छंद के जितने भी वर्ण होंगे उनमें कौन लघु कौन गुरु यह निश्चित रहता है।
मात्रिक छंद -- इसमें लघु गुरु का स्थान नियमित नहीं होता।

वर्णिक छंद --

इन्द्रवज्रा :-- त त ज + SS = 11 वर्ण

यह वर्णिक छंद है। इन्द्रवज्रा छंद में तगण, तगण जगण और अंतिम दो गुरु के क्रम से ग्यारह वर्ण होते है।

" मै राज्य की चाह नहीं करूंगा

है जो तुझे इष्ट वहीं करूंगा

संतान जो सत्यवती जानेगी

राज्याधिकारी वह ही बनेगी।"

उपेन्द्रवज्रा :-- ज त ज + SS = 11

यह वर्णिक छंद है। इस छंद में जगण तगण जगण और अंतिम दो गुरु के क्रम से ग्यारह वर्ण होते है।

"बड़ा कि छोटा कुछ काम कीजै

परन्तु पूर्वापर सोच लीजै

बिना विचारे यदि काम होगा

कभी न अच्छा परिणाम होगा।"

भुजंग प्रयात :-- 4 यगण = 12

यह वर्णिक छंद है। इसमें चार चरण होते है। प्रत्येक चरण में 12 वर्ण होते हैं। प्रत्येक चरण में क्रमशः चार यगण होते हैं।

"बनाती रसोई सभी को खिलाती
इसी काम से आज मैं तृप्ति पाती
रहा किन्तु मेरे लिए एक रोना
खिलाऊँ किसे मैं अलोना सलोना"

मंदाक्रांता :-- म भ न त त + SS = 17

समवर्ण छंद है। चार चरण, प्रत्येक चरण में 17 वर्ण होते हैं। यति 4-6-7 पर होती है। प्रत्येक चरण में क्रमश: मगण, भगण, नगण, तगण, तगण तथा चरणान्त में दो गुरु होते हैं।

"तारे डूबे, तम टल गया, छा गई व्योम-लाली।
पक्षी बोले, तमचर, जगे, ज्योति फैली दिशा में।
शाखा डोली तरु निचय की, कंज फूले सरों के।
धीरे-धीरे दिनकर कढ़े, तामसी रात बीती।।"

वंशस्थ :-- ज त ज र = 12

चार चरण, प्रत्येक चरण में 12 वर्ण होते हैं। प्रत्येक चरण में क्रमशः जगण, तगण, जगण, रगण व चरणान्त में लघु-गुरु होते हैं ।
।
"मुकुंद चाहे वसुदेव पुत्र हों,
कुमार होवें अथवा ब्रजेश के।
बिके उन्हीं के कर सर्वनेत्र हैं,
बसे हुए हैं मन-नेत्र में वही ।।"

मालिनी :-- न न म य य = 15

यह वर्णिक छंद है। इसमें चार चरण होते है। प्रत्येक चरण में 15 वर्ण तथा 8-7 वर्गों पर यति होती है। प्रत्येक चरण में दो नगण, एक मगण, दो यगण होते हैं ।

"प्रिय पति वह मेरा, प्राण प्यारा कहाँ है ?
दुख जलनिधि में डूबी, का सहारा कहाँ है ?
लख मुख जिसका मैं, आज लौं जी सकी हूँ।
वह हृदय हमारा नैन तारा कहाँ है ? "

द्रुत विलम्बित :-- न भ भ र =12

यह वर्णिक छंद है। इसमें चार चरण होते हैं तथा प्रत्येक चरण में 12-12 वर्ण होते हैं। प्रत्येक चरण में क्रमशः नगण, भगण भगण रगण आते हैं ।

"दिवस का अवसान समीप था,
गगन था कुछ लोहित हो चला ।
तरुशिखा पर थी अब राजति,
कमलिनी कुल वल्लभ की प्रभा ।।"

शार्दुल विक्रीडित :-- म स ज स त त + S = 19

यह वर्णिक छंद है। इसमें चार चरण होते है । प्रत्येक चरण में 19 वर्ण होते हैं । यति 12, 7 वर्गों पर होती है। प्रत्येक चरण में क्रमशः मगण, सगण, जगण, सगण, तगण, तगण, और अंत में गुरु वर्ण होते हैं ।

सायंकाल हवा समुद्र तट की आरोग्यकारी यहाँ ।
प्रायः शिक्षित सभ्य लोग नित ही जाते इसी से वहाँ ।।
बैठे हास्य-विनोद-मोद करते सानंद वे दो घड़ी।
सो शोभा उस दृश्य की हृदय को है तृप्ति देती बड़ी ।।

वसंततिलका :-- त भ ज ज + SS = 14

वसन्ततिलका छन्द सम वर्ण वृत्त छन्द है। यह चौदह वर्णों वाला छन्द है। 'तगण', 'भगण', 'जगण', 'जगण' और दो गुरुओं के क्रम से इसका प्रत्येक चरण बनता है।

हे हेमकार पर दुःख-विचार-मूढ
किं माँ मुहुः क्षिपसि वार-शतानि वह्नौ।
सन्दीप्यते मयि तु सुप्रगुणातिरेको
लाभः परं तव मुखे खलु भस्मपातः ॥"

कवित्त या घनाक्षरी वृत्त :--

कवित्त एक वार्णिक छन्द है। इसमें चार चरण होते हैं और प्रत्येक चरण में १६, १५ के विराम से ३१ वर्ण होते हैं। प्रत्येक चरण के अन्त में गुरू वर्ण होना चाहिये। छन्द की गति को ठीक रखने के लिये ८, ८, ८ और ७ वर्गों पर यति रहना चाहिये। इसके सात प्रकार हैं:- १-रूप घनाक्षरी, २ देव घनाक्षरी, ३- मनहरण घनाक्षरी, ४-डमरु या कृपाण घनाक्षरी, ५ जलहरण घनाक्षरी ६-७

उदाहरण- मनहरण घनाक्षरी

"कालिन्दी कौ कुंज कूल, जल की है कल कल,
कदम्ब की कारी कारी परी परछाई है।
अलि शुक पिक काक, मधुर मयूर वाक,
कर में कमलिनी की कटि गदाराई है ।।
घन घूमते घनेरे, धौरे धौरे श्याम धौरे,
हिय में हिलोर ऋतु हरी हरि छाई है,
तज दीजो कामराज आज सब साजबाज,
ब्रजराज साँवरे नै बंसुरी बजाई है।। (कवि: पवन पागल) "

तोटक छंद विधान :--

यह एक वार्णिक छंद है। इसमें कुल चार पंक्तियाँ होती हैं। प्रत्येक पंक्ति में कुल चार सगण अर्थात् लघु लघु गुरू x 4 कुल 12 वर्ण होते हैं । दो या चार समतुकांत होते हैं। यह छंद भक्ति, नीति, तथा आदर्श परक रचनाओं के लिए प्रसिद्ध है।

"वह आज बनी खुद ही सबला।
अब नार यहाँ न रही अबला ।।
करती सच आज सभी सपने।
फिर साथ चलें न चलें अपने ।।"

मात्रिक छंद

दोहा

यह एक अर्द्धसम मात्रिक छंद है. इसमें चार चरण होते हैं जिसके पहले और तीसरे चरण में 13 तथा दुसरे और चौथे चरण में 11 मात्राएँ होती हैं। जैसे

1] "गुरु गोविंद दोउ खड़े, काके लागूं पाँय ।
बलिहारी गुरु आपने, गोविंद दियो मिलाय॥"

2] "कागा काको धन हरै,
कोयल काको देय
मीठे बचन सुनाय कर,
जग अपनो कर लेय ।।"

3] "राम नाम की लूट है
लूट सके तो लूट
अंतकाल पछिताय तो
प्राण जायगे छुट । "

सोरठा

यह भी एक अर्द्धसम मात्रिक छंद है. यह दोहा छंद का ठीक उल्टा होता है, इसमें भी चार चरण होते हैं। इसके पहले और तीसरे चरण में 11-11 तथा दुसरे और चौथे चरण में 13-13 मात्राएँ होती हैं।

"जो सुमिरत सिधि होय, गन नायक करिबर बदन।
करहु अनुग्रह सोय, बुद्धि रासि सुभ गुन सदन ॥"

रोला

रोला एक सम मात्रिक छंद है, इसके प्रत्येक चरण में मात्राओं कि संख्या समान रहती है, इसके प्रत्येक चरण में 24 मात्राएँ होती हैं, जिसमे 11 और 13 मात्राओं पर यति होती है। उदाहरण

"यही सयानो काम, राम को सुमिरन कीजै ।
पर-स्वारथ के काज, शीश आगे धर दीजै ॥ "

चौपाई

परिभाषा - चौपाई एक सम मात्रिक छंद है। चौपाई में चार चरण होते है जिसके प्रत्येक चरण में 16 मात्राएँ होती है। चरण के अंत में गुरु या लघु नही होता है परंतु दो लघु और गुरु हो सकते है।

“बन्दउँ गुरुपद पदुम परागा।
सुरुचि सुवास सरस अनुरागा।।
अमिय मूरिमय चूरन चारू ।
समन सकल भव रुज परिवारू ।।”

कुंडलियाँ :--

परिभाषा - यह विषम मात्रिक एवं संयुक्त छंद है। इस छंद का निर्माण दोहा और रोल के संयोग से होता है। इसमें 6 चरण होते है। इसके प्रत्येक चरण में 24 मात्राएँ होती है।

“आये मेरे गाँव में, ये कैसे भूचाल ।
खुरपी वाले हाथ ने, ली बन्दूक सँभाल।
ली बन्दूक सँभाल, अदावत हँसती गाती ।
रोज सुहानी भोर, अदालत चलकर जाती।
लड़े मेड़ से खेत, लड़ रहे माँ के जाये।
कैसे कैसे हाय, नये परिवर्तन आये ” ....[डॉ रामसनेही लाल शर्मा 'यायावर']

हरिगीतिका :--

परिभाषा - यह एक सम मात्रिक छंद है। इसमें चार चरण होते है। जिसके प्रत्येक चरण में 28 मात्राएँ होती है तथा 16 और 12 मात्रा पर यति होता है।

1] “प्रभु गोद जिसकी वह यशोमति, दे रहे हरि मान हैं ।
गोपाल बैठे आधुनिक रथ, पर सहित सम्मान हैं ॥
मुरली अधर धर श्याम सुन्दर, जब लगाते तान हैं ।
सुनकर मधुर धुन भावना में, बह रहे रसखान हैं ॥”

2] "मेरे इस जीवन की है तू, सरस साधना कविता ।
मेरे तरु की तू कुसुमित, प्रिय कल्पना 'तू' लतिका।
मधुमय मेरे जीवन की प्रिय, है तू कल कामिनी।
मेरे कुंज कुटीर द्वार की, कोमल चरण गामिनी।”

गीतिका :--

गीतिका छन्द एक मात्रिक छन्द है। इसके चार चरण होते है। प्रत्येक चरण में १४ और १२ यति से २६ मात्राएँ होती है। अन्त में क्रमशः लघु गुरु होता है।

“हे प्रभो आनन्ददाता ज्ञान हमको दीजिये।
शीघ्र सारे दुर्गुणों को दूर हमसे कीजिये।
लीजिए हमको शरण में, हम सदाचारी बने।
ब्रह्मचारी, धर्मरक्षक वीर व्रतधारी बनें।”

छप्पय :--

 इस छंद में 6 चरण होते हैं। पहले चार चरण रोला छंद के होते हैं और अंत के दो चरण उल्लाला छंद के होते हैं। प्रथम चार चरणों में 24 मात्राएँ और बाद के दो चरणों में 26-26 या 28-28 मात्राएँ होती हैं।
जैसे :

"नीलाम्बर परिधान हरित पट पर सुन्दर है।
सूर्य-चन्द्र युग मुकुट, मेखला रत्नाकर है।
नदिया प्रेम-प्रवाह, फूल तो मंडन है।
बंदी जन खग-वृन्द, शेषफन सिंहासन है।
करते अभिषेक पयोद है, बलिहारी इस वेश की।
हे मातृभूमि! तू सत्य ही, सगुण मूर्ति सर्वेश की।"

उल्लाला छंद :-- यह मात्रिक छंद है। इसके हर चरण में 13 और 13 मात्राएँ होती है। आठवें पर यति होती है।

यदि चाहो भाव, निधि तरन
छोड़ दूसरों की सरन
करो पोतवत हरि चरण
वे ही है सब दुख हरन। "

बरवै :--

बरवै अर्द्धसम मात्रिक छन्द है। इसके प्रथम एवं तृतीय चरण में 12-12 मात्राएँ तथा द्वितीय एवं चतुर्थ चरण में 7-7 मात्राएँ हाती हैं। सम चरणों के अन्त में 'जगण' (ISI) होता है।[1] गोस्वामी तुलसीदास की प्रसिद्ध रचनाओं में से एक 'बरवै रामायण' बरवै छन्दों में ही रची गई है, जिसमें भगवान श्रीराम की कथा है।

“ अवधि शिला का उर पर,
था गुरुभार।
तिल-तिल काट रही थी,
दृग जल धार।। “

ताटंक : --

ताटंक मात्रिक छंद है। इसके कुल चार चरण होते हैं। इसके चरण में कुल 30 मात्राएँ होती हैं जिसमें 16-14 मात्रा भार के क्रम से यति निश्चित होती है ।इस छंद के लिए अनिवार्य नियम यह है कि प्रत्येक चरण का अंत सिर्फ "मगण" (SSS) यानि 3 गुरु से ही होना अनिवार्य है और यहाँ गुरु की जगह गुरु ही आएगा न कि दो लघु को मिलकर एक गुरु बनाना है । इस छंद में समतुकांत दो दो चरणों में ही मिलाया जायेगा न कि चार चरणों में । यह छंद वैसे तो ओज गुण और वीर रस के लिए ही उपयुक्त है लेकिन इस छंद में समसामयिक मुद्दों, सामाजिक-आर्थिक राजनीतिक चुनौतियों और चिंतनपरक विषयों पर भी लिखा जा सकता है।

1] फूलों की डोली में आई, शर्माती बरखा रानी।
इठलाती इतराती आई, कर बैठी कुछ नादानी।
बादल गरजे बिजली चमकी, झूम-झूम बरसा पानी।

भीग गया गोरी का आँचल, चिपक गई चुनरी धानी ।

2] राम आज फिर तुम्हें बुलाता,
मेरा भारत प्यारा है।
राम राज्य का पता नहीं है,
रावण सौ सिर धारा है ।
हर आँगन में काँटे बिखरे,
हर सीता कुम्ह लाई है।
असुरों के हाथों में भारत,
की सत्ता अब आई है।